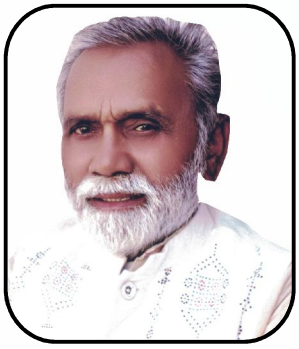

SHRI LAVJIBHAI NAGJIBHAI PARMAR

Shri Lavjibhai Nagjibhai Parmar is the Master Weaver of Tangaliya Craft, who has mastered the art of Tangaliya weaving.

2. Born on 28th July, 1959, Shri Parmar has studied upto 8th Standard at Wadhwan, Gujarat. After completing the education, he joined his father in the traditional Tangaliya Craft. Tangaliya weaving, also known as Daana weaving, is a 700 year old weaving technique, native to the Saurashtra region of Gujarat. The uniqueness of this craft lays in the dot patterns created by twisting weft around warp threads, which creates bead-like embroidery on the fabric. He is extremely passionate about the craft; and has ensured that he masters all the skills and knowledge associated with it.

3. Shri Parmar has taken the training from Weavers Service Centre, Ahmedabad to further improve the weaving technique. He has completed 4 months of training and applied that learning into the craft and helped the associated weavers to improve their productivity and quality of product. His work for the craft and society has earned him the National Award for his Tangaliya woollen shawl from Ministry of Textiles, Government of India in the year of 1990. His contribution to revive the craft and support the young weavers is widely recognized in the region. To support this cause, he is providing training to the young generation and travelling across the country to increase the visibility of the craft and understand the market trends.

4. During the period of 1996-2006, Tangaliya weavers faced economic distress due to high cost of raw material, seasonality of the market, and changing trend of the customers towards synthetic garments. Around 300-350 weavers were forced to quit the Tangaliya weaving due to shrinking margins, but Shri Parmar has continued their passion for weaving. Based on his observation, he has made some innovative changes in the weaving technique, shifting from pit loom to handloom, making product more customer friendly by introducing cotton and bringing new design and modifying the products. His continuous efforts has not only sustained and preserved the craft but also generated interest from Tangaliya weavers and many of the weavers who were working in the factory as a daily wage labourer has joined the craft. He has provided loom and space under the shed to the weavers so they can learn the new technique and starts to weave again.

5. In the year 2019, Shri Parmar was awarded with the Sant Kabir Award from Ministry of Textiles, Government of India. He got this award for weaving naturally dyed Tangaliya saree with exclusive dotted pattern.

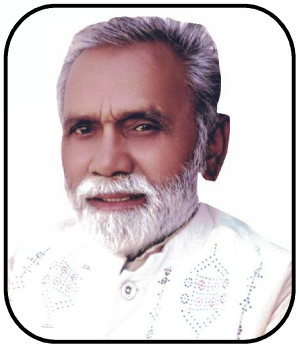

श्री लवजीभाई नागजीभाई परमार

श्री लवजीभाई नागजीभाई परमार तांगलिया शिल्प के अनुभवी बुनकर हैं, जिन्होंने तांगलिया बुनाई की कला में महारत हासिल की है।

2. 28 जुलाई, 1959 को जन्मे, श्री परमार ने गुजरात के वधवान से 8वीं कक्षा तक की पढ़ाई की है। शिक्षा पूरी करने के बाद, वे अपने पिता के साथ पारंपरिक तांगलिया शिल्प का कार्य करने लगे। तांगालिया बुनाई, जिसे दाना बुनाई के रूप में भी जाना जाता है, गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र की 700 वर्ष पुरानी बुनाई तकनीक है। इस शिल्प की विशिष्टता ताने के धागे के चारों ओर बाने को घुमाकर बनाए गए डॉट पैटर्न में निहित है, जो कपड़े पर बीड वर्क जैसी कढ़ाई बनाता है। वह शिल्प के प्रति बेहद उत्साही हैं; और उन्होंने सुनिश्चित किया कि वह इससे जुड़े सभी हुनरों और ज्ञान में महारत हासिल करें।

3. श्री परमार ने बुनाई की तकनीक को और बेहतर बनाने के लिए अहमदाबाद के बुनकर सेवा केंद्र से प्रशिक्षण लिया है। उन्होंने यहां से 4 महीने का प्रशिक्षण पूरा किया और उस प्रशिक्षण को अपने शिल्प में लागू किया और इस कला से जुड़े बुनकरों को उनकी उत्पादकता और उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद की। शिल्प के क्षेत्र में और समाज के लिए किए गए उनके काम ने उन्हें वर्ष 1990 में भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय से उनके तांगलिया वूलन शॉल के लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। शिल्प को पुनर्जीवित करने और युवा बुनकरों को सहयोग करने में उनके योगदान को क्षेत्र में व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है। इस उद्देश्य में सहयोग करने के लिए, वह युवा पीढ़ी को प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं और शिल्प की दृश्यता बढ़ाने और बाजार के रुझान को समझने के लिए देश भर में यात्रा कर रहे हैं।

4. वर्ष 1996–2006 की अवधि के दौरान, कच्चे माल की उच्च लागत, बाजार की मौसमी प्रवृत्ति और सिंथेटिक कपड़ों के प्रति ग्राहकों के बदलते रुझान के कारण तांगालिया बुनकरों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। घटते मुनाफे के कारण लगभग 300–350 बुनकर तांगालिया बुनाई छोड़ने के लिए मजबूर हो गए, लेकिन श्री परमार ने बुनाई के लिए अपने जुनून को जारी रखा। अपने अवलोकन के आधार पर, उन्होंने बुनाई तकनीक में कुछ अभिनव परिवर्तन किए, पिट लूम से हैंडलूम में बदलाव किया, कपास और नए डिजाइन लाकर और उत्पादों में बदलाव करके उत्पाद को अधिक ग्राहक अनुकूल बनाया। उनके निरंतर प्रयासों ने न केवल इस शिल्प को बनाए रखा और संरक्षित किया बल्कि तांगालिया बुनकरों की इसके प्रति रुचि भी पैदा की और कई बुनकर जो कारखाने में दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम कर रहे थे, वे शिल्प में शामिल हो गए। उन्होंने 'बुनकरों' को शेड में बुनाई की मशीन और जगह उपलब्ध करायी जिससे वो नई तकनीक सीख सकें और दोबारा बुनाई का काम शुरू करें।

5. वर्ष 2019 में श्री परमार को भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय की ओर से संत कबीर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें यह पुरस्कार विशेष बिंदीदार पैटर्न वाली प्राकृतिक रूप से रंगी हुई तांगलिया साड़ी बुनने के लिए मिला।